



DSSSB TGT & PGT



Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

विष्णु पुराण



LIVE

03-09-2024 05:00 PM



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

विष्णु पुराण



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

श्रीविष्णुपुराण (द्वितीय अंश)

तीसरा अध्याय

भारतादि नौ खण्डों का विभाग



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

श्रीपराशर उवाच

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।
वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः ॥1॥

श्रीपराशरजी बोले

हे मैत्रेय ! जो समुद्र के उत्तर तथा हिमालय के दक्षिण में स्थित
है वह देश भारतवर्ष कहलाता है। उसमें भारत की सन्तान बसी हुई है ॥1॥



नवयोजनसाहस्रो विस्तारोऽस्य महामुने ।

कर्मभूमिरियं स्वर्गमपवर्गं च गच्छताम् ॥२॥

हे महामुने ! इसका विस्तार नौ हजार योजन है। यह स्वर्ग और अपवर्ग प्राप्त करने वालों की कर्मभूमि है ॥२॥

① ② ③ ④ ⑤
महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानृक्षपर्वतः ।

विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तात्र कुलपर्वताः ॥३॥

⑥ ⑦
इसमें महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्ष, विन्ध्य और पारियात्र- ये सात कुलपर्वत हैं ॥३॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अतः सम्प्राप्यते स्वर्गो मुक्तिमस्मात्प्रयान्ति वै।

तिर्यक्त्वं नरकं चापि यान्त्यतः पुरुषा मुने ॥४॥

हे मुने ! इसी देश में मनुष्य शुभकर्मों द्वारा स्वर्ग अथवा मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं और यहीं से (पाप-कर्मों में प्रवृत्त होने पर) वे नरक अथवा तिर्यग्योनि में पड़ते हैं

॥४॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

इतः स्वर्गश्च मोक्षश्च मध्यं चान्तश्च गम्यते।

न खल्वन्यत्र मर्त्यानां कर्म भूमौ विधीयते ॥5॥

यहीं से (कर्मनुसार) स्वर्ग, मोक्ष, अन्तरिक्ष अथवा पाताल आदि लोकों को प्राप्त किया जा सकता है, पृथिवी में यहाँ के सिवा और कहीं भी मनुष्य के लिये कर्म की विधि नहीं है ॥ 5 ॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

भारतस्यास्य वर्षस्य नवभेदान्निशामय ।

इन्द्रद्वीपः कसेरुश्च ताम्रपर्णो गभस्तिमान् ॥6॥

नागद्वीपस्तथा सौम्यो गन्धर्वस्त्वथ वारुणः ।

अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागरसंवृतः ॥7॥

इस भारतवर्ष के नौ भाग हैं, उनके नाम ये हैं इन्द्रद्वीप, कसेरु, ताम्रपर्ण, गभस्तिमान्, नागद्वीप, सौम्य, गन्धर्व और वारुण तथा यह समुद्र से घिरा हुआ द्वीप उनमें नवाँ है ॥ 6-7 ॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

योजनानां सहस्रं तु द्वीपोऽयं दक्षिणोत्तरात् ।

पूर्वे किराता यस्यान्ते पश्चिमे यवनाः स्थिताः ॥८॥

यह द्वीप उत्तर से दक्षिण तक सहस्र योजन है। इसके पूर्वीय भाग में किरात लोग और पश्चिमीय में यवन बसे हुए हैं ॥८॥

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्या मध्ये शूद्राश्च भागशः ।

इज्यायुधधणिज्याद्यैर्वर्तयन्तो व्यवस्थिताः ॥९॥

तथा यज्ञ, युद्ध और व्यापार आदि अपने-अपने कर्मों की व्यवस्था के अनुसार आचरण करते हुए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रगण वर्णविभागानुसार मध्य में रहते हैं ॥९॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

शतद्रूचन्द्रभागाद्या हिमवत्पादनिर्गताः।

वेदस्मृतिमुखाद्याश्च पारियात्रोद्भवा मुने ॥10॥

नर्मदा सुरसाद्याश्च नद्यो विन्ध्याद्रिनिर्गताः।

तापीपयोष्णीनिर्विन्ध्याप्रमुखा ऋक्षसम्भवाः ॥ 11 ॥

हे मुने ! इसकी शतद्रू और चन्द्रभागा आदि नदियाँ हिमालय की तलहटी से वेद और स्मृति आदि पारियात्र पर्वत से, नर्मदा और सुरसा आदि विन्ध्याचल से तथा तापी, पयोष्णी और निर्विन्ध्या आदि ऋक्षगिरि से निकली हैं॥10-

11॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

गोदावरी भीमरथी कृष्णवेण्यादिकास्तथा।

सह्यापादोद्भवा नद्यः स्मृताः पापभयापहाः ॥12॥

गोदावरी, भीमरथी और कृष्णवेणी आदि पापहारिणी नदियाँ सह्यापर्वत से उत्पन्न हुई कही जाती हैं॥12॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

कृतमाला ताम्रपर्णीप्रमुखा मलयोद्भवाः।

त्रिसामा चार्यकुल्याद्या महेन्द्रप्रभवाः स्मृताः ॥13॥

ऋषिकुल्याकुमाराद्याः शुक्तिमत्पादसम्भवाः ।

आसा नद्युपनद्यश्च सन्त्यन्याश्च सहस्रशः ॥14॥

कृतमाला और ताम्रपर्णी आदि मलयाचल से, त्रिसामा और आर्यकुल्या आदि महेन्द्रगिरि से तथा ऋषिकुल्या और कुमारी आदि नदियाँ शुक्तिमान् पर्वत से निकली हैं। इनकी और भी सहस्रों शाखा नदियाँ और उपनदियाँ हैं॥13-14॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

तास्विमे कुरुपाञ्चाला मध्यदेशादयो जनाः।

पूर्वदेशादिकाश्चैव कामरूपनिवासिनः ॥15॥

पुण्ड्राः कलिङ्गामगधादक्षिणाद्याश्च सर्वशः।

तथापरान्ताः सौराष्ट्राः शूराभीरास्तथार्बुदाः ॥16॥

कारूषा मालवाश्चैव पारियात्रनिवासिनः।

सौवीराः सैन्धवा हूणाः साल्वाः कोशलवासिनः।

माद्रारामास्तथाम्बष्ठाः पारसीकादयस्तथा ॥17॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

इन नदियों के तट पर कुरु, पाञ्चाल और मध्यदेशादिके रहने वाले, पूर्वदेश और कामरूप के निवासी, पुण्ड्र, कलिंग, मगध और दक्षिणात्य लोग, अपरान्तदेशवासी, सौराष्ट्रगण तथा शूर, आभीर और अर्बुदगण, कारुष, मालव और पारियात्रनिवासी, सौवीर, सैन्धव, हूण, साल्व और कोशल-देशवासी तथा माद्र, आराम, अम्बष्ठ और पारसीगण रहते हैं। 15-17

॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

आसां पिबन्ति सलिलं वसन्ति सहिताः सदा।

समीपतो महाभाग हृष्टपुष्टजनाकुलाः ॥18॥

हे महाभाग ! वे लोग सदा आपस में मिलकर रहते हैं और इन्हीं का जल पान करते हैं। इनकी सन्निधि के कारण वे बड़े हृष्ट-पुष्ट रहते हैं॥18॥





DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

चत्वारि भारते वर्षे युगान्यत्र महामुने।

कृतं त्रेता द्वापरञ्च कलिश्चान्यत्र न क्वचित् ॥19॥

हे मुने ! इस भारतवर्ष में ही सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलि नामक चार युग हैं, अन्यत्र कहीं नहीं॥19॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

तपस्तप्यन्ति मुनयो जुह्वते चात्र यज्विनः।

दानानि चात्र दीयन्ते परलोकार्थमादरात् ॥20॥

इस देश में परलोक के लिये मुनिजन तपस्या करते हैं, याज्ञिक लोग यज्ञानुष्ठान करते हैं और दानीजन आदरपूर्वक दान देते हैं॥20॥

X



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

पुरुषैर्यज्ञपुरुषो जम्बूद्वीपे सदेज्यते।

यज्ञैर्यज्ञमयो विष्णुरन्यद्वीपेषु चान्यथा ॥2॥

जम्बूद्वीप में यज्ञमय यज्ञपुरुष भगवान् विष्णु का सदा यज्ञों द्वारा यजन किया जाता है, इसके अतिरिक्त अन्य द्वीपों में उनकी और-और प्रकार से उपासना होती है॥2॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महामुने।

यतो हि कर्मभूरेषा ह्यतोऽन्या भोगभूमयः ॥22॥

हे महामुने ! इस जम्बूद्वीप में भी भारतवर्ष सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि यह कर्मभूमि है
इसके अतिरिक्त अन्यान्य देश भोग- भूमियाँ हैं। ॥ 22 ॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

अत्र जन्मसहस्राणां सहस्रैरपि सत्तम।

कदाचिल्लभते जन्तुर्मानुष्यं पुण्यसञ्चयात् ॥2 3 ॥

हे सत्तम ! जीव को सहस्रों जन्मों के अनन्तर महान् पुण्यों का उदय होने पर
ही कभी इस देश में मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। 123॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

गायन्ति देवाः किल गीतकानि

धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे।

स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते

भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥24॥

देवगण भी निरन्तर यही गान करते हैं कि 'जिन्होंने स्वर्ग और अपवर्ग के मार्गभूत भारतवर्ष में जन्म लिया है वे पुरुष हम देवताओं की अपेक्षा भी अधिक धन्य (बड़भागी) हैं॥24॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

कर्माण्यसङ्कल्पिततत्फलानि

संन्यस्य विष्णौ परमात्मभूते।

अवाप्य तां कर्ममहीमनन्ते

तस्मिँल्लयं ये त्वमलाः प्रयान्ति ॥2 5॥

जो लोग इस कर्मभूमि में जन्म लेकर अपने फलाकांक्षा से रहित कर्मों को परमात्म-स्वरूप श्रीविष्णुभगवान् को अर्पण करने से निर्मल (पापपुण्य से रहित) होकर उन अनन्त में ही लीन हो जाते हैं (वे धन्य हैं!) ॥2 5॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

जानीम नैतत् क्व वयं विलीने

स्वर्गप्रदे कर्मणि देहबन्धम् ।

प्राप्स्याम धन्याः खलु ते मनुष्या

ये भारते नेन्द्रियविप्रहीनाः ॥26॥

'पता नहीं, अपने स्वर्गप्रदकर्मीका क्षय होने पर हम कहाँ

जन्म ग्रहण करेंगे। धन्य तो वे ही मनुष्य हैं जो भारतभूमि में उत्पन्न होकर

इन्द्रियों की शक्ति से हीन नहीं हुए हैं' ॥26॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

नववर्ष तु मैत्रेय जम्बूद्वीपमिदं मया।

लक्षयोजनविस्तारं सङ्गोपात्कथितं तव ॥27॥

हे मैत्रेय ! इस प्रकार लाख योजन के विस्तार वाले नववर्ष- विशिष्ट इस
जम्बूद्वीप का मैंने तुमसे संक्षेप से वर्णन किया ॥27॥





DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

जम्बूद्वीपं समावृत्य लक्षयोजनविस्तरः ।

मैत्रेय वलयाकारः स्थितः क्षारोदधिर्बहिः ॥28॥

हे मैत्रेय ! इस जम्बूद्वीप को बाहर चारों ओर से लाख योजन के विस्तार वाले वलयाकार खारे पानी के समुद्र ने घेरा हुआ है॥28॥

इति श्रीविष्णुपुराणे द्वितीयेंऽंशे तृतीयोऽध्यायः ॥31॥



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

श्रीविष्णुपुराण

(बिन्दुवार प्रश्न)

विष्णुपुराणे भारतादिनवखण्डानां वर्णनं विद्यते - द्वितीयांशस्य तृतीयेऽध्याये

भारतादिनवखण्डानां वर्णनं कुत्र वर्तते - विष्णुपुराणे ✓

भारतवर्षस्य विस्तारः वर्तते - नवसहस्रयोजनम् (नवयोजनसाहस्रम्)

भारतस्य सन्ततिः उच्यते - भारती

कस्योऽत्तरं भारतवर्षम् ? - समुद्रस्य

कस्य दक्षिणं भारतवर्षम् ? - हिमाद्रेः (हिमालयस्य)

નિર્ + વસ :

શે રિ

જીવવા :



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

भारतवर्षे कति कुलपर्वताः सन्ति? – सप्त

भारतवर्षस्य कुलपर्वतानां नामानि सन्ति - महेन्द्रः, मलयः, सह्यः,

शुक्तिमान्, ऋक्षः, विन्ध्यः, पारियात्रश्च।

भारतवर्षस्य कति भागाः (खण्डाः) सन्ति - नव

सागरसंवृतः द्वीपोऽस्ति - भारतवर्षस्य नवमः खण्डः (जम्बूद्वीपः)

भारतवर्षस्य पूर्वे (पूर्वीयभागे) के स्थिताः - किराताः

भारतवर्षस्य कस्मिन् भागे यवनाः स्थिताः? - पश्चिमे भागे



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

विष्णुपुराणानुसारं भारतवर्षस्य नवखण्डानां नामानि - इन्द्रद्वीपः, कसेरुः,
ताम्रपर्णः, गभस्तिमान्, नागद्वीपः, सौम्यः, गन्धर्वः, वारुणः, सागरसंवृतः
द्वीपश्च।

दक्षिणोत्तरात् सागरसंवृतद्वीपस्य विस्तारः - सहस्रयोजनम् (एक हजार
योजन)

पारियात्रपर्वतोऽद्भवाः सन्ति - वेदस्मृत्यादयः



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

चार वर्ण व उनके कर्म –

चार वर्ण व उनके कर्म –

वर्ण

कर्म

ब्राह्मण



इज्या

क्षत्रिय



आयुधम्

वैश्य

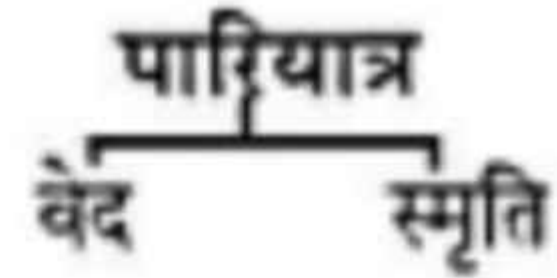


वणिज्या

शूद्र



सेवा

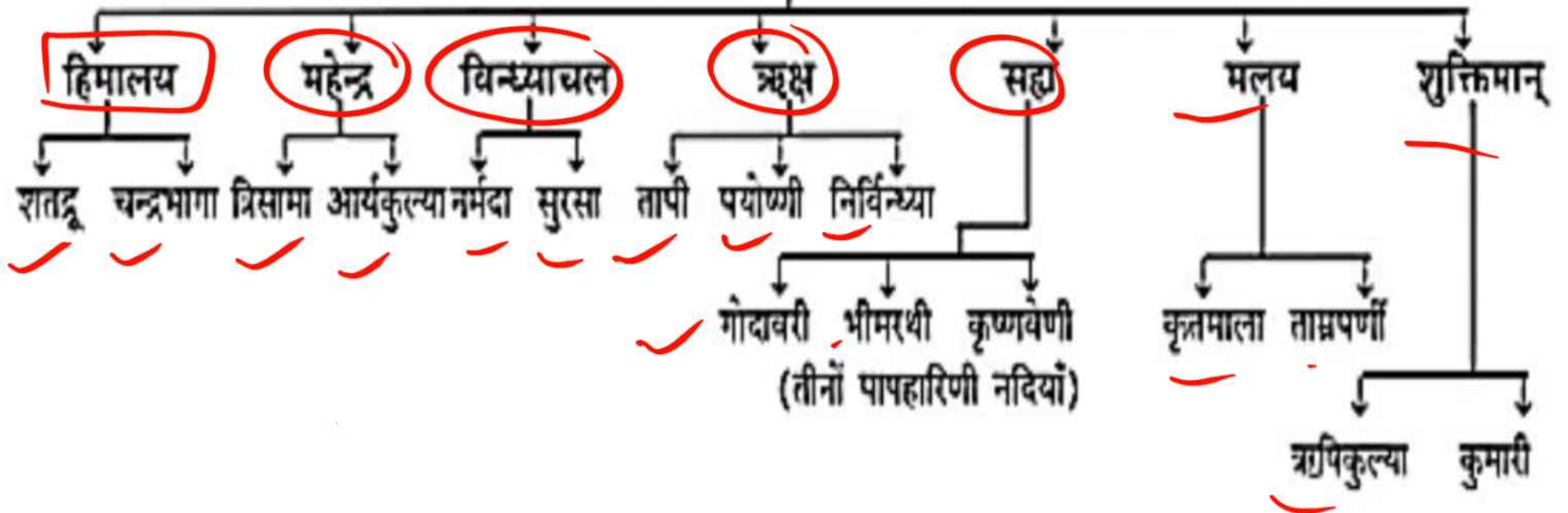




- इज्या-आयुध-वणिज्याद्यैर्वर्तयन्तो व्यवस्थिताः के? - ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राः
- ब्राह्मणानां कर्म अस्ति - इज्या
- विष्णुपुराणानुसारं ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राः सागरसंवृतद्वीपस्य कस्मिन् भागे स्थिताः? - मध्यभागे

कल २॥५६
६३०

पर्वत व उनसे निकली नदियाँ (विष्णुपुराण के अनुसार)





DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

- शतद्रूचन्द्रभागाद्याः नद्यः निर्गताः सन्ति - हिमवत्पादात् (हिमवतः)
- विन्ध्याद्रिनिर्गताः नद्यः काः? - नर्मदासुरसाद्याः
- तापीपयोष्णीनिर्विन्ध्याः नद्यः कुतः निर्गताः? - ऋक्षगिरेः
- गोदावरी-भीमरथी-कृष्णवेण्यादिकाः नद्यः कुतोऽद्भवाः? -
सह्यापर्वतात् (सह्यापादात्)
- पापभयापहारिण्यः नद्यः सन्ति - गोदावरी, भीमरथी, कृष्णवेणी च
- मलयाचलोऽद्भवाः नद्यः सन्ति - कृतमाला ताम्रपर्णीप्रमुखाः



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

- 'त्रिसामाचार्यकुल्याद्या स्मृताः' अत्र विलुप्तं पदं किम् ?

महेन्द्रप्रभवाः

- ऋषिकुल्या कुमारी च नर्चा कुतः निर्गते? - शुक्तिमतः पर्वतात्
- भारतवर्षे कति युगानि प्रचलितानि - चत्वारि
- चतुर्युगानां नामानि सन्ति - कृतं, त्रेता, द्वापरं कलिश्च
- यज्विनः कुत्र जुहते - भारतवर्षे
- भारतवर्षे के तपस्तप्यन्ति ? - मुनयः



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

- छात्र दीयन्ते परलोकार्थमादरात्' अत्र अवशिष्टं पदं किम् ? -

दानानि

- जम्बूद्वीपे पुरुषः कः देवः इज्यते? - यज्ञपुरुषो विष्णुः
- विष्णुपुराणानुसारं कर्मभूः वर्तते - भारतम्
- भारतेतर भूमयः सन्ति - भोगभूमयः
- यतो हि कर्मभूरेषा रेखाङ्कितपदेन संलक्ष्यते- भारतभूमिः
- भारतवर्षः कस्मिन् द्वीपे अस्ति? - जम्बूद्वीपे



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

- अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महामुने।
- यतो हि कर्मभूरेषा हातोऽन्या भोगभूमयः॥ श्लोकोऽयं कुत्र निबद्धः ? -
विष्णुपुराणे
- 'धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे!' इत्यादि गीतकानि के गायन्ति ? - देवाः
- स्वर्गापवर्गयोः मार्गभूतः कः ? - भारतवर्षः
- 'तस्मिन्नल्लयं ये त्वमलाः प्रयान्ति' पद्यांशोऽयं कुत्र निबद्धः ? -

विष्णुपुराणे



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

- 'तस्मिन्नल्लयं ये त्वमलाः प्रयान्ति' इमाम् अमृतवाणीं कः कं प्रति प्रोक्तवान्? - **पराशरः मैत्रेयं प्रति**
- कर्माणि तत्फलानि च कुत्र संन्यसेत्? - **परमात्मभूते विष्णौ**
- लक्षयोजनविस्तरः वलयाकारः कः? **क्षारोदधिः**



DSSSB TGT & PGT



SCHOLAR BATCH

संस्कृत

- लक्षयोजनविस्तारेण क्षारोदधिना समावृतः कः? जम्बूद्वीपः
- क्षारोदधिसमावृतः कः - जम्बूद्वीपः
- सात पर्वत 1. इन्द्रद्वीप 2. कसेरु 3. ताम्रपर्ण 4. गभस्तिमान् 5. सौम्य 6. गन्धर्व 7. वारुण